चरित्र एवं नैतिक विकास

डॉ. भुपेन्द्र कौर,
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

प्रस्तावना (Introduction)

कहा जाता है कि किसी शिक्षित चरित्रहीन व्यक्ति की अपेक्षा एक अशिक्षित चरित्रहीन व्यक्ति साज के लिए अधिक उपयोगी होता है। अर्थात जीवन के समस्त गुणों, समृद्धि एवं यश की आधारशिला सदाचार है, सच्चरित्रता है। शिक्षा किसी भी समाज तथा राष्ट्र की रीढ होती है जिसके आधार पर उस समाज और राष्ट्र का निमार्ण होने के साथ उेश का चहुंमुखी विकास होता है। समय के साथ होने वाले परिवर्तन आवश्यकता महसूस करते है कि शिक्षा में भी परिवर्तन किया जाये। इन्ही परिवर्तनों के चलते 1986 की शिक्षा नीति में सुधार करके भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई। इस नीति में सभी के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

गांधी जी का मत था कि बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा का सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास ही शिक्षा है। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी का कीना है कि मनुष्य की अर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

चरित्र विकास (Character Development)

शिक्षा का उदय चारित्रिक विकास के सन्दर्भ मे होता आया है। समय एवं परिस्थितियों में आज सामाजिक एवं राष्ट्रीय मान्यताओं को बदला, जिसमें नागरिकों का चरित्र गठन भी बदला। विद्वानों का मत है कि चरित्र के नष्ट हो जाने से

मनुष्य जानवर बन जाता है। चरित्र शब्द की व्याख्या में विद्वानों ने आदत, स्थायीभाव, इच्छाशक्ति, संवेग और आत्म-नियनत्रण आदि शब्दों को प्रयुक्त किया है। वास्तविक तो यह है कि सभी शब्द चरित्र के एक-एक पक्ष की परिभाषा करते हैं, सम्पूर्ण चरित्र को नहीं, क्योंकि वैयक्तिक्ता का प्रभाव मानव व्यवहार में दृष्टिगोचर होता है, चरित्र चेतन जगत से सम्बन्ध रखता है, अचेतन से नही, चरित्र सामाजिक कुशलता का परिचायक है जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती हैं। चरित्र अर्जित गुणों का संगठन है जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती है। अर्थात सुसंगठित आत्मा ही चरित्र है। इस संगठित आत्मा के अन्दर सब कुछ आ जाता है।

अच्छे चरित्र की विशेषताएँ (गुण) Characteristics (Merits) of Good Character

चरित्र सामाजिक धरोहर होती है जिसे एक पीढी आने वाली पीढी को सौंपती है। अतः हम अच्छे चरित्र के लक्षणों अथवा गुणों को निम्नलिखित प्रकार से समझते है-

1. **आत्म अनुशासन (Self discipline)-** अच्छे चरित्र के व्यक्ति में आत्म अनुशासन का गुण होता है। वह स्वयं को विभिन्न परिस्थितियों में नियंत्रिण करके सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी भावनाओं, इच्छाओं एवं संवेगों आदि पर नियंत्रण स्थापित करता है ताकि समाज विरोधी क्रिया न हो सके।

2. **दृढ निश्चय (Resolute)**–संसार के प्रमुख व्यक्तियों की सफलता के पीछे विशेष रूप से दृढ निश्चय का गुण पाया जाता है कार्य को करने का संकल्प या इच्छा शक्ति की तीव्रता आदि व्यक्ति में लगन एवं दृढता उत्पन्न करती है। इसलिए वह असंभव को संभव करने में सफल रहते हैं।

3. **विश्वसनीयता (Reliability)**-अच्छे चरित्र का एक गुण विश्वसनीयता भी है। चरित्रवान लोगों पर सभी को विश्वास होता है। वे सदेव सर्व हित की बात करते हैं, सिद्धान्तों एवं नियमों पर चलते हैं। इनमें तर्क की कसौटी पर परखे गये उपाय एवं

विचार होते है। उन पर मित्र एवं शत्रु समान रूप से विश्वास करते है। क्योंकि वह जनहित का कार्य करता है।

4. **कर्तव्यनिष्ठा (Duty ful)**–-अच्छे चरित्र के व्यक्ति में अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेतना एवं जागरूकता रहती है। उनका कर्त्तव्य व्यक्तिगत न होकर समाज हित का होता है। वे भविष्य की और उन्मुख रहते हैं भू की ओर नहीं। वे गीता के कर्म प्रधान जीवन पर विश्वास करते है।

5. **विवेकशील (Reasoning power)**-बुद्धि पर अंकुश लगाने के लिए प्रकृति ने विवकेशक्ति को जन्म दिया है। अच्छे चरित्र में विवेकशीलता अधिक पायी जाती है। वह प्रत्येक निर्णय या संकल्प बुद्धि के आधार पर न लेकर विवके के आधार पर लेता है। अतः यह सभी कार्यो में सफलता प्राप्त करता है और अन्स लोक उसके अनुगामी अनते हैं।

6. **सरल एवं सहजता (Easy and easyness)** -अच्छे चरित्र के व्यक्ति बडे ही सरल एवं सहज होते हैं। उनके व्यवहार में बच्चों सी सरलता एवं सहजता पायी जाती है। वे कष्टों में भी नही घबराते हैं। उनका चेहरा सदैव प्रसन्न एवं प्रफुल्लित रहता है। वे छल-कपट से दूर रहते है।

7. **उत्तरदायित्वता (Responsibility)**-अच्छे चरित्र के व्यक्ति में उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य की भावना प्रबल होती है। ऐसे लोग बात के धनी होते है जो कार्य अपने कन्धों पर लेते है उसे पूरा करके ही छोडते हैं।

8. **वस्तुनिष्ठता (Objectiveness)**-अच्छे चरित्र के व्यक्ति में एक गुण वस्तुनिष्ठता भी होता है। वे लोग जो भी कार्य करते हैं, चाहे परिवार या दूसरे के लिए लेकिन इनका जीवन दूसरे का ही होता है स्वयं का नही इसलिए इनको समाज या राष्ट्र विशिष्ट सम्मान प्रदान करता हैं।

चरित्र को अच्छा बनाने में कुशल शिक्षक का महत्व (Importance of skilled Teacher to Make Good Character)

परिवार रूपी प्रथम पाठशाला में चरित्र निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद बालक विद्यालय में पहुँचता है। सामान्य रूप से विचार किया जाये तो विद्यालय में प्रवेश की अवस्था चरित्र निर्माण को विकसित करने का द्वितीय प्रयास है। दूसरे शब्दो में, बालक में चरित्र निर्माण को जो बीज परिवार या माता-पिता द्वारा बोया गया है उसको विकसित करने तथा परिपक्वावस्था प्रदान करने में विद्यालयी व्यवस्था का प्रमुख योगदान होता है। एक शिक्षक यदि कुशल नही हैं तो वह चरित्रवान बालक के उन चारित्रिक गुणों को भी नष्ट कर देगा जो कि उसने अपने परिवार से सीखे हैं। यदि शिक्षक पूर्णतः कुशल है तो वह दो प्रकार के कार्य करता है। प्रथम वह बालकों में उन चारित्रिक गुणों को विकसित तथा परिपक्वावस्था प्रदान करता है, जिसको बालक विद्यालय में आने से पूर्व सीख कर आता है। द्वितीय उन बालकों में वह चारित्रिक गुणों का बीजारोपन करता है जिसमें चारित्रिक गुणों का अभाव है। विद्यालय में एक शिक्षक का वही स्थान बालक के चरित्र निर्माण में होता है जो कि एक परिवार में माता-पिता का होता है। इसलिए एक कुशल शिक्षक की बालकों के चरित्र को सर्वोत्तम रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पस्ट किया जा सकता है-

1. **शिक्षक का आदर्श व्यवहार (Ideal behaviour of teacher)**-एक कुशल शिक्षक का व्यवहार पूर्णतः आदर्श एवं अनुकरणीय होना चाहिये क्योंकि बालक जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो मानता है कि उसका शिक्षक सर्वोपरि है तथा उसके कार्य व्यवहार से उसको सीखना चाहिये। इसलिए शिक्षको को अपने व्यवहार में उन सभी गुणों का समावेश कर लेना चाहिये, जिनकी उपेक्षा वह बालक से करता है; जैसे-शिक्षक यदि विद्यालय में समय से जाता है तो बालक भी समय से आयेंगे तथा शिक्षक अपने प्रधानाध्यापक की आज्ञा का पालन करता है तो छात्र भी शिक्षक की आज्ञा का पालन करेंगे। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि बालक अपने शिक्षक के व्यवहार का अनुकरण करके चारित्रिक गुणों को सिखाता है।

2. **शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार (Positive behaviour of teacher)**-सामान्यताः यह देखा जाता है कि शिक्षक बालक द्वारा त्रुटि करने पर उत्तेजित हो जाते है। उत्तेजना के कारण वह बालक शारीरिक दण्ड देते है या उसे प्रताडित करते हैं, जबकि शिक्षक को इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिये। शिक्षक द्वारा सदैव यह ध्यान रखना चाहिये कि बालक की त्रृटि को सुधारने के लिए सर्वप्रथम उसका विश्वास जीतना चाहिये। जब बालक यह अनुभव करने लगे कि शिक्षक उसका सबसे बडा हितैषी है तथा उसके द्वारा बालक के हित में कार्य किया जायेगा तब उसको उसकी त्रुटि समझानी चाहिये फिर उसको सही दिशा में लाने का प्रयास करना चाहिये।

3. **नैतिक कार्यो को प्रोत्साहन (Motivation to moral activities)**-शिक्षक को सदैव यह ध्यान रखना चाहिये कि जो छात्र नैतिक कार्यों को सम्पन्न करते है। उनको पुरस्कार दिया जाये; जैसे-एक बालक तैरना जानता है तथा वह डूबते हुए बालका को बचा लेता है या एक बालक अंधे व्यक्ति को सडक पार कराकर उसे घर तक पहुँचाता है आदि। इन सभी प्रकार के कार्यों के लिए बालक को पुरस्कार देना चाहिये। इससे सभी बालक नैतिकता एवं मानवता से युक्त कार्यों को करने के लियें प्रोत्साहित होगें तथा उनमें चारित्रिक गुणों का विकास सम्भव होगा।

4. **सामूहिक गतिविधियों को प्रोत्साहन (Motivation to group activities)** -विद्यालय में शिक्षक को यह प्रयास करना चाहिये कि बालकों को सामूहिक रूप सें कार्य प्रदान किये जायें। सामूहिक रूप सें कार्य प्रदान करने पर बालकों में संवेगात्मक स्थिरता का विकास होता है। इससे प्रत्येक बालक अपने संवेगों पर नियंत्रणकरता है तथा दूसरे व्यक्ति के संवेगों को समझने का प्रयास करता है। इस प्रकार बालकों में विवाद के स्थान पर प्रेम व सहयोग की भावना का विकास होता है।

5. **सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन (Planning of social programmes)**-विद्यालय में शिक्षक द्वारा समय-समय पर सामाजिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिये। सामाजिक कार्यक्रमों में वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान एवं शैक्षिक रैली आदि का आयोजन किया जा सकता है। इस प्रकार की गतिविधियों से बालक में समुदाय के सदस्यों का सहयोग लेने की भावना का विकास होता है तथा बालकों को सामाजिक गतिविधियों एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का ज्ञान होकर उनमें सामाजिक गुणों का विकास तीव्र गति से सम्भव हो सकेगा।

6. **स्वतन्त्रता के अवसर (Opportunity of freedom)**-शिक्षक की बालकों पर अनावश्यक रूप से प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप बालक के विचार एवं अन्तर्निहित प्रतिभाओं का दमन हो जाये। प्रत्येक बालक को अपने विचार प्रकट करने के अवसर देने चाहिए, जिससे बालक प्रत्येक घटना एवं व्यवस्था पर तार्किक विचार कर सकें एवं सही निष्कर्ष पर पहुँच सकें। अधिक नियंत्रण होने से बालका के चारित्रिक विकास में बाधा पडती है।

7. **बालको को सम्मान (Respect to children)**-बालक के सम्मान से आशय बालक के विचार एवं क्रियाओं के सम्मान से है। जब बालक किसी घटना या तथ्य के बारे में जानना चाहता है तो शिक्षक को उसे बताने का प्रयास करना चाहिए न कि उसको टालने का प्रयास करना चाहिये। बालक का स्वभाव बहुत जिज्ञासु होता है वह अपने प्रश्नों का क्रम तब तक निरंतर बनाये रखता है जब तक उसकी जिज्ञासा शान्त नही हो जाती। इसलिए प्रत्येक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि बालक का सम्मान करे; जैसे एक बालक ईमानदारी के बारे में जानना चाहता है तो उसको ईमानदारी के प्रत्येक पक्ष के बारे में ज्ञान प्रदान करना चाहिए, जिससे उसके मन में ईमानदारी के भाव स्थायी रूप से जाग्रत हो सके।

8. **महापुरूषों की जयन्तियों पर विशेष कार्यक्रम (Specific programmes on great men’s birthday)**-महापुरूषों की जयन्तियों

पर बालकों के लिए विशेष कार्यक्रम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे बालक कार्यक्रम के द्वारा उन महापुरूषों के गुणों के बारे में जान सके। इनक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए बालक उन महापुरूषों से सम्बन्धित साहित्य के बारे में अध्ययन करता है। अध्ययन की प्रक्रिया में बालक उन महापुरूषों के गुणों, कार्यो एवं व्यवहार को आत्मसात् करता है, जिससे उसमें चारित्रिक गुणों का विकास होता है।

9. **चारित्रिक गुणों के पृथक् अंक** -शिक्षक को विद्यालय में चारित्रिक कार्यो के विकास हेतु पृथक् अंको की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे छात्र उन सभी गतिविधियों को सम्पन्न करने में रूचि ले सकें जो कि चरित्र से सम्बन्धित होती है; जैसे-एक बालक सामाजिक एवं सास्कृतिक कार्यक्रमों में अपना विशेष सहयोग देता है। वह विद्यालय के विकास एवं स्वच्छता हेतु अपना समय देता है। वह विद्यालय से बाहर भी नैतिक एवं मानवीय कार्य करता है। ऐसे बालकों को पृथक् अंक प्रदान करने चाहिये।

10. व्यापक सोच का विकास -प्राय; समाज में अनेक प्रकार की ऐसी गतिविधियाँ देखी जाती है जो कि हमारी संकीर्ण सोच को प्रदर्शित करती है; जैसे-जाति सम्बन्धि संकीर्ण सोच, धर्म सम्बन्धि संकीर्ण सोच, और क्षेत्रीय सम्बन्धि संकीर्ण सोच आदि। इस प्रकार की संकीर्ण सोच के स्थान पर शिक्षक की बालकों में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित करनी चाहिये, जिससे बालक सम्पूर्ण पृथ्वी के मानवों को अपने परिवार का सदस्य समझे, सार्वजनिक हित के लिये कार्य करें तथा स्वहित एवं स्वार्थ के प्रति कम ध्यान दें।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि एक शिक्षक बालकों के चरित्र के संरक्षण करने, उसको निखारने तथा परिपक्वता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि बालकों को प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर कुशल शिक्षक प्राप्त हो जाते हैं तथा परिवार में माता-पिता द्वारा बालकों में उच्च चारित्रिक गुणों का

बीजरोपण कर दिया जाता है तो बालकों का विकास चरित्रवान नागरिक के रूप में होता है। इसमें शिक्षक, शिक्षा एवं विद्यालय तीनों की ही भूमिका होती है।

नैतिक विकास

बालक अपने वातावरण में अनेक व्यक्तियों और वस्तुओं से घिरा रहता है। विकास क्रम में वह धीरे-धीरे इनके सम्पर्क में आता है और सम्बन्ध स्थापित करने लगता है। इन सम्बन्धों के परिणामस्वरूप वह सुख-दुख का अनुभव करता है। फलस्वरूप वातावरण में उपस्थित व्यक्तियों और विभिन्न पहलूओं के प्रति इसके भीतर मनोवृत्तियों का निर्माण होने लगता है। बालक अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर कुछ व्यक्तियों में स्थायी रूप से रूचि होने लगती है। जब बालक कुछ बडा हो जाता है तब अपने परिवार, समुदाय एवं समाज के द्वारा अपनायी गयी नैतिक भावनाओं, आदर्शों अथवा मूल्यों को भी ग्रहण करने लगता है। यह प्रक्रिया एक क्रमिक प्रक्रिया होती है और इस दौरान बालक को यह चेतना भी नही रहती कि सामाजिक आदर्शों को सीख रहा है। धीरे-धीरे बालक का अधिकांश व्यवहार उसे परिवार, विद्यालय और समुदाय द्वारा स्वीकृत नैतिक मूल्यों के नियंत्रण में आ जाता है। सामाजिक नैतिक मूल्यों को अपनाकर ही बालक अपने परिवार और समुदाय की वास्तविक सदस्यता प्राप्त कर सकता है। मूल्य व्यक्ति की वह नैतिक शक्ति है जिसकी सहायता से वही अच्छे-बुरे और उचित-अनुचित में अन्तर समझ पाता है। मूल्यों को बालक प्रारम्भ में अपने सामाजिक एवं सास्कृतिक परिवेश से सीखते हैं और जब वह उन्हें भली-भाँति ग्रहण का लेते है तो वे नैतिक विशेषताएँ बन जाती है।

बालक अपने जीवन प्रयास में जिस परिवार, पाठशाला और समाज का सदस्य बनता है उनके कुछ विशेष सामाजिक एवं नैतिक मूल्य और आदर्श होते है। बालक को इस सामाजिक भागों के अनुरूप बनना पडता है और उन्हीं के द्वारा निर्देशित आचरण करने पडते है। अतः सामाजिक एवं नैतिक मूल्य बालक के सम्पूर्ण आचरण के निर्धारक माने जाते है और उनका उसके व्यवहार पर गहरा

प्रभाव पडता है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के मूल्य विकसित होते है। यही नही एक ही बालक के परिवार तथा उसके समुदाय के मूल्यों में भी अन्तर पाया जाता है। यदि बालक के परिवार और समुदाय के शैक्षिक स्तरों में महत्वपूर्ण अन्तर हुआ तो इसका बालक के आचरण पर बहुत बुरा प्रभाव पडता है और उसके सम्मुख मानसिक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी दशा में सबसे उत्तम बात यह समझी जाती है कि व्यक्ति अपने पुराने और नये दोनों समुदायों के मुख्य-मुख्य नैतिक मूल्यों को स्वीकार कर ले परन्तु ऐसा तभी सम्भव है जब दोनों समुदायों के मूल्यों में परस्पर ज्यादा बहुत विरोध न हो।

नैतिक विकास का महत्व

हम किसी भी बच्चे के बचपन को देख कर उसका भविष्य निर्धारित नही कर सकते। समय के साथ व्यक्ति की भावनाएँ, विचार और आचरण बदलते रहते है। यह सब जानने के बाद भी माता-पिता और परिवार के सदस्य छोटे बच्चे को एक अच्छा इंसान बनने की सीख देते है। वर्तमान में काफी बदलाव देखने को मिलते है, आज के माता-पिता बच्चों को जरूरी नैतिक मूल्य सिखाने के बजाय हर क्षेत्र में परफेक्ट बनाने की मशीन या रोबोट बनाने का प्रयास करते है। वर्तमान समय में बच्चे को मल्टीटास्किंग होना जरूरी है, लेकिन जीवन में पूरी तरह खुश रहने क लिए बच्चे का नैतिक विकास भी बहुत जरूरी है।

नैतिक विकास की अवस्थाएँ

मनोवैज्ञानिकों ने बालक के नैतिक विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ निर्धारित की हैं। फिर भी एक ही आयु के बालकों में नैतिक विकास में भिन्नता देखी जाती है।-

1. नवजात शिशु-नवजात शिशु में नैतिकता समबन्धी भावना अविकसित होती है।

2. प्रथम तीन वर्ष-प्रारम्भिक वर्षों में बालक आत्मकेन्द्रित होता है। उसका प्रत्येक व्यवहार संवेगजनक होता है। वह नैतिकता को ठीक-ठीक नही समझ पाता।

3. तीन से छः वर्ष की आयु-इस आयु में नैतिकता का पूरा-पूरा विकास नही होता है। उसका व्यवहार अब भी प्रौढ व्यक्तियों की प्रशेसा और निन्दा पर निर्भर करता है। बालक अभी झूठ और सत्य की पहचान नही कर सकता। उसकी किसी बात को झूठ कहने पर वह हैरान हो जाता है।

4. छः से नौ वर्ष की आयु-इस आयु में बालक में ध्वंसात्मक प्रवृत्ति जोर पकडती है। इस अवस्था में बालक प्राथमिक पाठशाला के छात्र होते है। वे न्याय और दया दिखाने में गहरी आस्था रखते है। उनके व्यवहार में अभी भी संवेगात्मकता का पर्यान्त अंश रहता है।

5. नौ से बारह वर्ष की आयु-इस आयु में बालक अच्छाई और बुराई को समझने लगता है। किशोरावस्था से पूर्व बालक नैतिक विकास की दृष्टि से अभी भी अपरिपक्व है। प्रौढों के उपदेशों की अपेक्षा वह उनके व्यवहारिक जीवन से अधिक प्रभावित होता है।

नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक (तत्त्व)

1. **बुद्धि का प्रभाव-**बालक की बुद्धि का प्रभाव उसकी नैतिकता के विकास पर भी पडता है बालक नैतिक और अनैतिक आचरणों, सत्य और असत्य निर्णयों तथा अच्छी और बुरी भावनाओं के अन्तर को अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर ही समझ पाता है।

2. **आयु का प्रभाव-**बडे बच्चों में अल्प आयु के बालकों की अपेक्षा बुरे-भले, उचित-अनुचित और सत्य-असत्य के भेद को समझने की क्षमता अधिक विकसित हो जाती है।

3. **यौन भिन्नता का प्रभाव-**बालक और बालिकाओं में नैतिक और चारित्रिक स्तरों में यौन के कारण भी भिन्नता दिखाई पडती है। बालक-बालिकाओं के भीतर ग्रन्थि संस्थान भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। उसकी भिन्नता का प्रभाव उनके चरित्र, नैतिक और व्यक्तित्व के ऊपर बहुत अधिक पडता है।

4. **घर का प्रभाव-**बालक की नैतिकता और चरित्र को प्रभावित करने वाला सबसे शक्तिशाली तत्तव उसका परिवार माना जाता है। जिन घरों में बालक को अधिक नया मिलता है, उन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है तथा उनके साथ सद्भावनापूर्ण व्यवहार किया जाता है, वहाँ बालकों का परिवार समायोजन अच्छे प्रकार का होता है।

5. **विद्यालय का प्रभाव-**बालक के नैतिक विकास में उसके विद्यालय का बहुत बडा हाथ होता है। विद्यालय के शिक्षक, शिक्षको द्वारा चुना गया पाठ्यक्रम, विद्यालय के साथी तथा विद्यालय की व्यवस्था से चार तत्त्व उसके ऊपर विभिन्न रूपों में अपना प्रभाव डालते है।

6. **धार्मिक संस्थाओं का प्रभाव-**धार्मिक संस्थाओं की स्थापना व्यक्तियों के भीतर नैतिक एवं चारित्रिक चिकास हेतु होती हैं परन्तु इन धार्मिक संस्थाओं का प्रभाव बालक के ऊपर उसी सीमा तक पड सकता है जिस सीमा तक उसके माता-पिता या शिक्षक उसमें विश्वास रखते है।

7. **मनोरंजन का प्रभाव-**बालक की नैतिकता और चरित्र मनोरंजन के विभिन्न साधनों द्वारा भी निर्देशित और नियन्त्रित होता है। इस सन्दर्भ में यहाँ चलचित्रों, रेडियों तथा पुस्तकों के प्रभावों का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

(अ) **चलचित्र देखना-**चलचित्रों का प्रभाव बालक की नैतिकता पर अच्छा पडेगा या बुरा यह चित्रों में दिखायी घटनाओं और उन्हें देखने की आवृत्ति पर निर्भर करता है।

(ब) **रेडियो सुनना-**रेडियों पर प्रसारित विद्वानों के भाषणों नैतिक शिक्षाओं, दिलचस्प कहानियों, दैनिक समाचारों तथा सुन्दर और उच्च कोटि के संगीतों का प्रभाव बालकों पर बडा ही अच्छा पडता है।

(स) **पुस्तक पढना-पुस्तकों,** पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार-पत्रों को पढना नैतिक विकास के लिए आवश्यक समझा जाता है परन्तु नैतिक मूल्यों के विकास के लिए जितना लाभकारी धार्मिक साहित्य होता है उतना उपन्यास आदि नही।

निष्कर्ष-निष्कर्ष रूप से **जे.एस.रॉस** के शब्दों में, “सुसंगठित आत्मा ही चरित्र है।” 'Character is just the organized self.' को प्रस्तुत कर सकते है। इस संगठित आत्मा के अर्न्तगत सभी कुछ आ जाता हैं इसलिए चरित्र के लिए समाज को आवश्यक माना गया है। जैसा कि **स्किनर एवं हैरीमैन** ने लिखा है, “चरित्र व्यक्तित्व का एक आवश्यक आसैर महत्वपूर्ण अंग है। और इसके विकास का उत्तरदायित्व समाज पर है।” 'Character is one of the most significant aspect as personality and its development a major task of society.' राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के तहत बालक के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की गई है जिसमें बालक चरित्र निर्माण, नैतिक और सामाजिक विकास विकास की शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन में उनको अपना सके। शिक्षा नीति में इस बात का ध्यान रखा गया है कि बालकों को इस प्रकार की शिक्षा से काफी लाभ प्राप्त होगा।

सन्दर्भ सूची-

Durlak, J.A., Weissberg, R.P., Dymnicki, A.B., Taylor, R.D., and Schellinger, K.B. (2011). The impact of enhancing students’ social and emotional learning: A meta-analysis of school-based universal interventions. Child Development, 82(1), 405-432.

National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. 2017. Approaches to the Development of Character: Proceedings of a Workshop. Washington, DC: The National Academies Press. https://doi.org/10.17226/24684.

Keltner, D., and Haidt, J. (2003). Approaching awe, a moral, spiritual, and aesthetic emotion. Cognition & Emotion, 17(2), 297-314.

National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. 2017. Approaches to the Development of Character: Proceedings of a Workshop. Washington, DC: The National Academies Press. https://doi.org/10.17226/24684.

Kohlberg, L., and Mayer, R. (1972). Development as the aim of education. Harvard Educational Review, 42(4), 449-496.

National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. 2017. Approaches to the Development of Character: Proceedings of a Workshop. Washington, DC: The National Academies Press. https://doi.org/10.17226/24684.

Watkins, P.C., Woodward, K., Stone, T., and Kolts, R.L. (2003). Gratitude and happiness: Development of a measure of gratitude, and relationships with subjective well-being. Social Behavior and Personality, 31, 431-452.

National Academies of Sciences, Engineering, and Medicine. 2017. Approaches to the Development of Character: Proceedings of a Workshop. Washington, DC: The National Academies Press. https://doi.org/10.17226/24684.